International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 27-07-2021, Accepted: 11-08-2021, Published: 27-08-2021
Volume 7; Issue 4; 2021; Page No. 130-135

उत्कलनिर्माता मधुसूदन दास

डॉ. शिशिर बेहेरा

सहकारी प्रोफेसर, ओड़िआ भाषा एवं साहित्य विभाग, महाराजा श्रीरामचन्द्र भंजदेओ विश्वविद्यालय, केन्दुझर परिसर, ओड़िशा, भारत।

सारांश

उत्कलगौरब मधुसूदन दास का राष्ट्रीय स्तर पर एक सम्माननीय उल्लेख है। वह ओड़िआ अस्मिता का एक ज्वलंत उदाहरण हैं। मधुसूदन उस महान सम्मान के श्रेय के पात्र हैं, जो ओड़िशा ने ब्रिटिश शासित भारत में एक अलग भाषाई प्रांत के गठन में हासिल किया है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी मधुबाबु की स्थापित 'उत्कल टेनरी' की यात्रा से प्रभावित थे। शुद्ध ओड़िआ के रूप में मधुबाबु के सम्मान ने प्रत्येक ओड़िआ को गौरवान्वित किया है। 1917 में, उन्होंने मोंटीगु-चेम्सफोर्ड से मुलाकात की और ओड़िआ-भाषी क्षेत्र के एकीकरण और एक भाषा-स्वतंत्र राज्य के गठन की मांग प्रस्तुत की । 20 जनवरी, 1913 को, मधुसूदन बिहार ओड़िशा विधान सभा के ओड़िशा प्रतिनिधि के रूप में चुने गए । मधुबाबू ओड़िआ राष्ट्र के पहले एम.ए, पहले वकील, पहले विदेशी यात्री, भाइसराय की व्यवस्थापक समिति के पहले ओड़िआ सदस्य, पहले ओड़िआ मंत्री थे। मधु बैरिस्टर के नाम से वह समस्त ओड़िआ वासियों का शाश्वत अभिवादन है।

मूलशब्दः उत्कल सम्मिलनी, उत्कलगौरब, स्वतंत्र ओड़िशा प्रदेश, भाषाभित्तिक प्रदेश, कूलबृद्ध, ओड़िआ अस्मिता, नवजागरण, राष्ट्रीयता

प्रस्तावना

उत्कल कई महापुरुषों और जननायकों के पुण्य भूमि है। इस भूमि में अनेक सुपुत्र अपने-अपने साधना के पराकाष्ठा को केवल प्रदर्शित ही नहीं किये बल्कि आजीवन कठिन साधना करके उपलब्धियों को भी प्रमाणित किये हुये हैं। यही कारण है कि वे हमेशा-हमेशा स्मरणीय और पूजनीय हुए हैं। 'यशोदेहे आयुष्मान' वही पुण्य आत्माओं के त्याग-बलिदान एवं साधना के बल पर अनेक असाध्य कार्य साध्य हुआ है। इस देश और राष्ट्र की अस्मिता की स्थापना में उन वीरों के महान योगदान के लिए उन्हें समय-समय पर याद किया जाता है। वे हमेशा के लिये राष्ट्रीय जीवन के इतिहास में एक महापुरुष के रूप में प्रतिष्ठित हो जाते हैं। उन्हीं में से पुण्यात्मा तथा ओड़िशा के वाणीपुत्र उत्कलगौरव मधुसूदन दास एक हैं, जो ओड़िशा के इतिहास में एक महान व्यक्तित्व रूप में स्मरणीय हैं। उत्कलमाता के स्वर्णिम गरिमा की पुनः प्रतिष्ठित करने में उनका प्रचेष्टा एवं पराकाष्ठा ही वास्तव में उन्हें सभी ओड़िआओं के बीच श्रध्दावान बनाया है। दूसरे शब्दों में कहें तो, मधुसुदन दास एक शुद्ध ओड़िशा है। वे 'कुलवृद्ध' और 'मधुबाबू' के नाम से केवल ओड़िशा में ही नहीं, बल्कि समग्र भारत में परिचित हैं। वे एक देशभक्त, वकील, राजनीतिज्ञ, जननायक और साहित्यकार के रूप में असाधारण

प्रतिभा के धनी थे। उसी प्रतिभा का सफल और आत्मनिर्भर रूप स्वयं उत्कलगौरव उन्नीसवीं शताब्दी का पांचदशक ओड़िशा वासियों के लिए संधि का क्षण था। उत्कल का स्थापत्य, परंपरा और इतिहास का उस समय निष्प्राण हो गया था। नौ अंक दुर्भिक्ष (1866) के साथ भाषा सुरक्षा आंदोलन (1869/70), भाषा के आधार पर स्वतंत्र राज्य का गठन, जमींदार, राजा एवं साहूकारों का शोषण और भाषा विलोप का षड्यन्त्र आदि घटनाएँ उस समय के एक-एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया था। इसी तरह की एक जटिल परिस्थिति में उत्कलगौरव मधुसूदन दास का आविर्भाव होता है। उनके आविर्भाव से ही उड़िया राष्ट्रीय जीवन में आत्मजागृति दिखाई दिया। समाज, साहित्य, शिक्षा, उद्योग, अर्थव्यवस्था और राजनीति आदि सभी क्षेत्रों में जननायक मधुबाबू के कर्म प्रेरणा एवं शाश्वत भागीदारी ने उत्कल के जीवन में नए सूर्योदय का स्वागत किया। उन्होंने शासन, नीति, समाज, संस्कृति के पुनरुद्धार और ओड़िशा के पुनर्गठन के लिए काम किये। उन्होंने खुद को मातृभूमि की सेवा के लिए समर्पित कर मानव धर्म की पराकाष्ठता को प्रदर्शन किये।

मधुसूदन सही मायने में उत्कलगौरव थे। वह ओड़िशा की शिक्षा, साहित्य, कला, मूर्तिकला, इतिहास और इतिहास की एक अमूल्य प्रतिभा हैं। मातृभूमि और मातृभाषा की उन्नति के लिए उनका समर्पित मनोभाव ही इसका यथार्थ उदाहरण है। केवल ओड़िशा ही क्यों, ओड़िशा की आपदाओं और अकाल के समय में मधुबाबू की सक्रिय भागीदारी और इसकी पुनरुद्धार के लिए व्यापक तैयारी और आंदोलन ने भी पाश्चात्य देशों को भी प्रभावित किया है। मधुबाबू के जीवन में उत्कलीय आत्मा के माध्यम से भारतीय प्रेम का अंतहीन प्रवाह बहता रहा । तमाम संकीर्णताओं के बावजूद इस जननायक की महानता और देशभक्ति वास्तव में उल्लेखनीय थी। इसके सन्दर्भ में सच्चिदानंद राउतराय ने लिखा है कि- “चारो ओर जब अंधकारमय था। उसी समय सुप्त निद्रा में सोये हुए लोगों की गहरी जहरीली सांसों से आसमान भरा है, बाढ़, अकाल जैसी महामरिओं के कारण ओड़िशा श्मशान बनाने की कगार पर है। उसी समय वह इस श्मशान भूमि को आये थे जिस समय चारों ओर लाखों की संख्या में चिताओं में शवों की ढेर लगी हुई थी। एक विशाल जन समुद्र के सुनसान समुद्र तट पर बैठकर उन्होंने सबसे पहले इस विशाल जनसमूह को जगाने का सपना देखा था। उसी समय ही उन्होंने इस मृत जाति के सढ़े हुए शवों के सामने ही संकल्प लिया था । महाध्वंस, महाप्रलय के मध्य वे ओड़िशा के प्रथम श्मशान पुजारी थे। मधुसूदन ने मृत संजीवनी मंत्र को सुनाकर राष्ट्रीय जीवन में जागरण का आह्वान किये थे । वे सृष्टि के मधुर संदेश को ले जाने के लिए, संसार को मुक्ति की शुद्ध मिठास से पोषित करने के लिए आए थे।” मधुबाबू ने राष्ट्रीय जीवन की उन्नति के लिए निरंतर कोशिश करते रहे। इसलिए उन्होंने कृषि, वाणिज्य, उद्योग, कला, संस्कृति और साहित्य के विकास को अधिक महत्व दिये थे। देश और देश की कामना के लिए उनके प्रयास और उनके विद्वतापूर्ण अभिभाषण सही मायने में प्रेरणा का स्रोत था। स्त्री शिक्षा, शिक्षा का मूल्यबोध, राष्ट्रीयता और व्यक्तिगत जीवन, राष्रीयता और देशभक्ति, घरेलू उद्योग की उन्नति, के लिए मधुबाबू का उद्बोधन एवं अभिव्यक्ति उनके राष्ट्रीय आत्मा और देशभक्तिपूर्ण हृदय का सच्चा प्रतिबिंब है। उत्कलगौरब मधुसूदन ओड़शा के पुनर्जागरण के अग्रदूत थे। उन्होंने उड़िशा को हर क्षेत्र में एक समृद्ध राज्य बनाने का सपना देखा था । उन्होंने ओड़शा के आर्थिक विकास के लिए स्वप्न देखते थे। कटक का सोने और चांदी के प्रसिद्ध तारकसि काम को अधिक विकसित करने केलिए 'ओडिशा आर्ट वायर' की भी स्थापना की।

उनके कर्मनिष्ठा से महात्मा गांधी भी अनुप्राणित हुए। राष्ट्रपिता महात्मागांधी भी मधुबाबु की स्थापित 'उत्कल टेनरी' की यात्रा से प्रभावित थे। मधुसूदन ने ओड़िशा में महात्मागांधी से पहले कई संरचनात्मक कार्यों को शुभारम्भ कर चुके थे। सभी के सहयोग और एकता को ही आजादी के मूलमंत्र के रूप में विश्वास किये थे। इसलिए उन्होंने कहा था कि " देश, काल, पात्र, उम्र एवं शिक्षा के अनुसार जिस स्थान में लोगों की जो-जो आवश्कताएँ है उसके अनुसार ही हमें उसी क्षेत्र में उन्नति करना होगा । यदि आप ईमानदारी से देश की उन्नति करना चाहते हैं तो मैं आपको भारत माता के पवित्र नाम पर विश्वास दिलाता हूँ कि उत्कल माता की ओर से मैं प्रार्थना करता हूं कि देश की उन्नति में गरीबों को मत भूलिये। सबको साथ लेकर ही देश की प्रगति करिए । जो शिक्षित व्यक्ति अपने आपको आम आदमी से श्रेष्ठ होने पर गर्व करता है वह अनैतिक है और उसका शिक्षण व्यर्थ है। इनको छोड़कर आप कभी भी अकेले सभ्यता की सीढ़ी पर नहीं चढ़ सकते। ऐसी लापरवाही में कभी भी भगवान और भारत माता का आशीर्वाद नहीं मिलेगी।" (उत्कलगौरव मधुसूदन - नवकिशोर दास, पृष्ठ/ 204) मधुसूदन को एक पत्र में गांधीजी ने लिखे था- "मैं कटक जाऊंगा और आपके साथ रहूंगा। हां, आप ही मुझे यह संदेश देंगे कि उत्कल में चरखा की काम कैसे विस्तार किया जाएगा।"

मधुबाबू एक रचनात्मक लेखक थे। उनके अधिक रचनाओं में देशभक्ति का सन्देश एवं प्रचलित कानून व्यवस्था के प्रति व्यंग्यात्मक स्वर दिखाई देता है। उनकी कविताओं ने ओड़िशा के लोगों को जगाने और एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उत्कल के इतिहास और सामंजस्यपूर्ण परंपरा के कई कहानियों और तत्वों पर मधुबाबू के आकर्षक भाषणों और चमत्कारपूर्ण वक्तव्यों से उनकी साहित्यिक ह्रदय का एक अच्छा परिचय देती है। उन्होंने ओड़िआ में 7 कविताएँ और 13 गद्य लिखे हैं, लेकिन उनकी अधिकांश रचनाएँ अंग्रेजी में लिखी गई है। संख्या की दृष्टि से उड़िया में उनकी रचनाओं की संख्या कम है, लेकिन साहित्य की दृष्टि से वह एक-एक अनमोल निधि है। देश और राष्ट्र के एकत्रीकरण, 'उत्कल सम्मिलनी' का महान उद्देश्य आदि उनकी कविताओं में स्पष्ट दिखाई देता है। भाषा-साहित्य में उनकी असीम आग्रह और आकर्षण था। इसलिए उन्होंने कई बैठकों में इस पर ही जोर दिये थे। उनके भाषण का एक हिस्सा उसीका प्रमाण है-"ध्यान रखें कि आप जो भी लिखेंगे वह देश में हमेशा के लिए उपयोगी हो। संरचनात्मक साहित्य लिखिये। उच्चस्तरीय आलोचना कीजिए। ईर्ष्या, कुंठा और निन्दा से मुक्त रहिए। हमारे देश के आध्यात्मिक परम्पराओं से अलग मत होईए। इस वैज्ञानिक युग की प्रगति को देखते हुए समाज की आर्थिक और नैतिक कल्याण के लिए जो साहित्य आवश्यक है उस प्रकार की साहित्य का सृजन करें। अपनी अभिलाषाओं को शीर्ष में रखते हुए, भविष्य में जो जिस क्षेत्र में भी रहें, अपनी भाषा, जाति और साहित्य के प्रति दृष्टि रखें और उसके के लिए जो त्याग आवश्यक उसे प्रदान करें।" (पहला अभिभाषण)

उत्कलनिर्माता कुलबृद्ध 'मधुसूदन' ओड़िशा नवजागरण के अग्रदूत थे। स्वतंत्र उत्कल प्रदेश निर्माण में उनका चिन्तनशील मनोभाव और क्रांतिकारी योगदान उनके जीवन के अंतिम क्षण तक जारी था। पत्रकारिता, वकालत और राजनीति में उनके प्रतिभाशाली व्यक्तित्व की पहचान स्पष्ट देखने को मिलता है। उनकी राजसी प्रतिभा पर टिप्पणी करते हुए ब्रजसुंदर दास ने कहा कि "जिस प्रकार घायल क्रोंच पक्षी को देखते हुए वाल्मीकि से छंदबद्ध वाक्य उच्चारित हुआ था,उसी प्रकार हमारे राष्ट्र के अमानवीय स्थिति के देखते हुए स्वदेशप्राण मधुसुदन से भी अनायास ही कुछ

छंदबद्ध पंक्तियाँ उच्चरित हुई है।" (संकलक-मधुमंत्र)

मधुसूदन दास के योगदान केवल देश और राष्ट्र के पुनर्निर्माण में ही नहीं था, बल्कि उत्कल के इतिहास को पुनरुद्धार करने और संस्कृति एवं परंपरा के आदर्शों को स्थापित करने के लिए प्रयासरत थे। सन् 1901 में 'गंजाम जातीय समिति' की स्थापना के उपरांत 'उत्कल सम्मेलनी' की स्थापना और देशमिश्रण आंदोलन ने समग्र ओड़िशा में नवजागरण का उन्मेष किया था। इसका प्रभाव साधारण जनताओं से लेकर राजनीतिक हस्तियों और लेखकों को अधिक मात्रा में प्रभावित किया था। विभिन वर्ग के लोगों को प्रभावित करने में मधुसूदन दास अहम भूमिका निभाई थी। इसलिए मधुबाबू जाति के प्राण और शुद्ध ओड़िआ के रूप में उत्कल गौरव मधुबाबू की भूमिका निर्विवाद है। वे उत्कल की पूर्व गरिमा को पुनर्स्थापित करने के लिए जिस प्रकार उत्सुक थे ठीक उसी प्रकार ओड़िशा के दयनीय परंपरा को देख कर मर्माहत भी हुए थे। सन् 7 मार्च, 1913 को इम्पीरियल काउंसिल के एक भाषण से उनकी देशभक्ति का पता चलता है।" ओड़िशा की प्राचीन कला और वास्तुकला से ओड़िआ जाति की कलात्मकता का प्रमाण मिलता है। लेकिन दुर्भाग्य का विषय यह है कि जिस हाथ ने कभी भुवनेश्वर के मंदिरों के पत्थरों में अतुलनीय सौन्दर्य निर्माण किया करता था वह आज दो पैसों की मजदूरी से हल जुताई कर रहा है। क्या उस दिन की महिमा को पुनरुद्धार करने के लिए क्या कुछ नहीं किया जा सकता?" मधुबाबू का देशप्रेम और राष्ट्रीयता ने उन्हें एतिहासिक रूप से सचेत कराया है। इसलिए इतिहास उनके सामने स्रोतस्विनी बन गयी है। उन्होंने लिखा है कि,

"राष्ट्रीय इतिहास राष्ट्रीय धारा में
बहते राष्ट्र के प्राण
पीता है जो नर उस धारा की नीर
अवश्य होगा वह जातीय कर्मवीर
कल-कल ध्वनि से बहती जो पानी

गाती वह अतीत की गौरव वाणी। (जाति इतिहास), स्वतंत्र विचार के साथ-साथ देशभक्ति की अभिव्यक्ति, उनके कवि हृदय में जान भर दी। उनके ज्ञानवर्धक काव्य के साथ जातीय चेतना महा मंत्र उनके कविताओं में स्पष्ट रूप में दिखाई दिया है । उत्कल की पराधीनता, भाषा-आंदोलन, राष्ट्र के इतिहास एवं परंपराओं की गरिमा आदि उनके लेखन में अंतर्निहित है। समाज की दयनीय स्थिति मधुबाबू को काफी विचलित किया था, जिसके फलस्वरूप उनके कविताओं में व्यंग्यात्मकता दिखाई दिया है। उनके अनुसार चाटुकारिता प्रिय लोगों का विकास कदापि सम्भव नहीं हो सकता। जब तक स्वार्थी मनोभाव का परित्याग नहीं होगा, तब तक देश का विकास और समृद्धि संभव नहीं हो सकता। इसीलिए मधुसूदन कहते हैं-

तुम मन में सोचे हो चाटुकारिता से
बढाओगे राष्ट्र का मान
चाटुकारिता की कुत्तें प्रवृति
जूठा पत्ते में ध्यान । (उत्कल संतान)

मधुसूदन के 'जणाण', 'उत्कल संतान', "जननीर उक्ति', 'संतानर उक्ति', "सम्मिलनी", "जाति इतिहास", 'ए भावे पाइब काहीं', इन्हीं सात भिन्न-भिन्न कविताओं में राष्ट्रीय प्रेम, स्वदेशी भावना को स्पष्ट अनुभव किया जा सकता है । 'उत्कल सम्मिलनी' का प्रतिष्ठा कर उत्कल के प्रगति पथ को उन्मुक्त किये थे ।

'उत्कल सम्मिलनी' में मधुबाबू अपनी ओजस्वी भाषण देकर इस समाज के सोए हुए जनताओं को जागृत करने के लिए कोशिश किये हैं । इस

सम्मिलनी के महान आवश्यकताओं को भी सभी के लिए संबोधित किये थे । उत्कल सम्मेलन के तेरहवें सत्र में उनके भाषण से जातीय आत्मा की गहन पराकाष्ठाता दिखाई देता है। उन्होंने कहा था कि "'उत्कल सम्मिलनी का उद्देश्य ओड़िआ लोगों का उत्थान करना है। ओडिशा में किसानों की संख्या अधिक है। इसलिए उनका उन्नति नहीं हुआ तो देश का क्या उन्नति होगा?" इसलिए मधुबाबू इस निष्प्राण जाति के शरीर में प्राण संचार में महान भूमिका निभाए हैं । कभी वे अपनी भाषण से, कभी लेखन के माध्यम से नवीन कार्य करने के लिए प्रेरणा दिये हैं । कभी-कभी उत्कलमाता की दुर्दशा और दयनीय स्थिति ने उन्हें व्यथित किया है। इसलिए उन्होंनें राष्ट्रीय जागरण के लिए महाभारत के अनेक प्रसंगों को उद्धृत किये हैं । कवि के अभिमान स्वर में भी आशा की किरणें दिखाई देती है -

"जननी के अपमान हेतु
उत्कल भूमध्यवासी
उत्कल माटी पवित्र हुआ है
स्वर्गादपि गरीयसी ।"

मधुसूदन उत्कल सम्मेलन के माध्यम से ओड़िआ भाषा की सुरक्षा, स्वतंत्र उड़ीसा की भौगोलिक सीमाओं का सीमांकन, कृषि की उन्नति और स्वदेशी उद्योग की विकास के लिये सफल प्रयास किये थे। इसके साथ ही अपने अभिभाषण, वक्तृता, साहित्य के माध्यम से देश की स्थिति को ब्रिटिश पार्लियामेंट उपस्थापन करने में प्रमुख भूमिका लिए थे। परलाखेमुंडी का 'उत्कल हितैषी समाज', ब्रह्मपुर के 'गंजाम जातीय समिति' में आदि ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक-एक सफल अभियान था। 1895 मई 10 को सभी ओड़िआ भाषी क्षेत्रों को एकजुट करने के लिए मधुबाबू की अध्यक्षता में कटक में एक बैठक आयोजित किया गया था और इसे सर्वसम्मति के साथ ही इसे स्वीकार किया गया था। बाद में सन1898 में मधुसूदन को ओड़िशा के प्रथम प्रतिनिधि के रूप में बंगाल लाट सभा के सदस्य के रूप निर्वाचित हुए । वहां उन्होंने संबलपुर के समिश्रण, ओड़िशा के भूमि व्यवस्था, नमक विभाग और उड़ियाओं के लिए नौकरी के क्षेत्र में अवसर आदि प्रस्तावों को उपस्थापित किये थे। देश मिश्रण के पश्चात ओड़िशा के उद्योगों का विकास करना भी इनका लक्ष्य था। 'उत्कल ट्यानेरी' इसका प्रमुख उदाहरण है।

निष्कर्ष

उत्कलमाता और भारतमाता के मध्य अभेद प्रतिपादन करनेवाले मधुबाबू वास्तव में एक वीरपुरुष थे। साधुता, निर्भीकता, सत्यनिष्ठा, समर्पण और त्यागपूर्ण कर्म साधना उनके जीवन का प्रण था। उस महान व्रत से अनुप्राणित करने के लिए उन्होंने उत्कल की सभी जनताओं में अनंत राष्ट्रीय प्रेम का जूनून भर दिए थे। जीवन के अंतिमक्षण तक उनका राष्ट्रीय प्रेम वैसा ही था। इस अमूर्त साधक के बारे में लेखक सुरेन्द्र मोहंती द्वारा दिया गया मत उचित प्रतीत होता है। उन्होंने कहा कि "ओड़िआ जाति के निर्माता, पुनर्जागरण के अग्रदूत और भारतीय जागृति के अग्रदूतों में से एक के रूप में मधुसूदन को इतिहास में याद किया जाएगा । राजनीति मधुसूदन का कर्मभूमि था एवं राजनीति को उन्होंनें स्वार्थ से बहुत आगे लेकर गये थे । बलिदान एक भाव लोक की शून्य गर्भ कल्पना नहीं है स्वयं के दिनचर्या में स्वार्थमेध यज्ञ में जो होमाग्नि प्रज्वलित किये थे उसमें वह आत्मबलिदान दिए थे । वह स्वार्थ से अलग रह कर ओड़िआ जाति को अपनी महान नेतृत्व में वह स्वाभिमान देने में सक्षम हुए थे।" (सन ऑफ द सेंचुरी)

मधुसूदन का सपना उनकी मृत्यु के दो साल बाद साकार हुआ। ओड़िआ भाषी क्षेत्र का एकीकरण हुआ। हालांकि सिंहभूम और मेदिनीपुर ओड़िशा से अलग होकर रह गया फिर भी मधुबाबू की परिकल्पित 'उत्कल सम्मिलनी' का उद्देश्य काफी हद तक सफल रहा। ओड़िशा को एक स्वतंत्र राज्य की मान्यता मिली। उस दिवंगत महापुरुषों का त्यागपूर्ण जीवन, बलिदान, जातीय आत्मीयता भावधारा के कर्मनिष्ठ कर्तव्य साधना ही उन्हें पूरे भारत में स्वतंत्र मर्यादा एवं पहचान दी है। ये राष्ट्र, ये उत्कल की मिट्टी उनके समक्ष हमेशा के लिए उनकी कृतज्ञ एवं आभारी रहेगी। पूरे ओड़िआ जाति को एक साथ लाने और उन्हें विश्व दरबार में स्थापित करने में मधुबाबू के प्रयास सफल हुए हैं। इसके लिए प्रसिद्ध लेखक सुरेंद्र महांति ने मधुसूदन की उपलब्धियों का आकलन करके कहते हैं -

"मधुसूदन की जीवनी ओड़िआ राष्ट्र का महाकाव्य है। मधुसूदन को इतिहास में ओड़िआ जाति के पिता, पुनर्जागरण के अग्रदूत और भारतीय जागृति के पुरोधा के रूप में याद किया जाएगा।" (महानायक मधुसूदन)

वास्तव में उत्कलगौरव कुलबृद्ध मधुसुदन दास का क्रांतिकारी नेतृत्व, राष्ट्रीय चिंता एवं चेतना सभी ओड़िशावासी को नवीन मंत्र में अभिषेक करवाया है। एक शुद्ध ओड़िआ के रूप में उनका स्वाभिमान और अभिमान लंबे समय तक राष्ट्र के इतिहास में अंकित होगा। इसलिए प्रख्यात लेखक-कवि राधामोहन गड़नायके ने उत्कल गौरव मधुसूदन के प्रति सम्मान प्रदर्शन करते हुए लिखते हैं कि,

'आप थे अकेले हे मधुसूदन उत्कल के वीरपुत्र,
आप थे अकेले इस गरीब देश के व्यग्र अग्रदूत
पहले आप इस देश में जगे शिक्षा के जग में
पहले आप इस देश में खिले थे गौरव के कानन में
पहले आप गये थे गौरव गीत इस देश में
पहले आप लाये थे आलोक जीवन में
आप सोचे थे अंतर्मन में होगा यही ज्ञान
जन्मभूमि नश्वर नहीं है उसमें भी है जान ।
"(कुलबृद्ध मधुसुदन)

संदर्भ ग्रंथसूची

1. उत्कल साहित्य समाज-उत्कल साहित्य समाजर इतिहास
2. सुरेन्द्र महांति-ओड़िआ साहित्यर क्रमविकाश
3. डॉ. मायाधर मानसिंह-ओड़िआ साहित्यर इतिहास
4. डॉ. नटवर सामन्तराय-ओड़िआ साहित्यर इतिहास
5. प्रगति उत्कल संघ-उत्कल सम्मिलनी